



परसपेक्टवि: गगि इकॉनमी

चर्चा में क्यों?

वैश्विक स्तर पर रोजगार के रुझान में एक महत्वपूर्ण बदलाव का कारण गगि इकॉनमी का उदय है। बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप (BCG) की एक रिपोर्ट के अनुसार, [भारत के गगि वर्कफोर्स](#) में सॉफ्टवेयर, साझा सेवाओं और पेशेवर सेवाओं जैसे उद्योगों में कार्यरत 1.5 मिलियन कर्मचारी शामिल हैं।

- **साझा सेवाएँ:** यह व्यवसाय संचालन का समेकन है जो एक ही संगठन के कई हिससों द्वारा उपयोग किया जाता है।
- **व्यावसायिक सेवाएँ:** यह एक अमूर्त उत्पाद है जिसे एक ठेकेदार या उत्पाद विक्रेता ग्राहक को अपने व्यवसाय के एक विशिष्ट हिस्से का प्रबंधन करने में मदद करने के लिये बेचता है।

वभिन्नि 'कॉलर' नौकरियाँ क्या हैं?

- **ब्लू-कॉलर कार्यकर्त्ता:** ये ऐसे मजदूर हैं जो शारीरिक श्रम करते हैं और घंटे के हिसाब से मजदूरी प्राप्त करते हैं।
- **व्हाइट-कॉलर कार्यकर्त्ता:** ये वेतनभोगी पेशेवर हैं, जो आमतौर पर सामान्य कार्यालय के कर्मचारियों और प्रबंधन को देखते हैं।
- **गोल्ड-कॉलर कार्यकर्त्ता:** इसका उपयोग अत्यधिक कुशल ज्ञान वाले लोगों को संदर्भित करने के लिये किया जाता है जो कंपनी हेतु अत्यधिक मूल्यवान हैं। उदाहरण: वकील, डॉक्टर, शोध वैज्ञानिक आदि।
- **ग्रे-कॉलर कार्यकर्त्ता:** यह सफेद या नीले-कॉलर के रूप में वर्गीकृत न किये गए नयोजित लोगों के संतुलन को संदर्भित करता है।
- **हालाँकि ग्रे-कॉलर उन लोगों का वर्णन करने के लिये प्रयोग किया जाता है जो सेवानिवृत्त की आयु से परे काम करते हैं। उदाहरण: अग्निशामक, पुलिस अधिकारी, स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर, सुरक्षा गार्ड आदि।**
- **ग्रीन-कॉलर कार्यकर्त्ता:** ये ऐसे कार्यकर्त्ता हैं जो अर्थव्यवस्था के पर्यावरणीय क्षेत्रों में कार्यरत हैं।
 - उदाहरण: वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों जैसे- सौर पैनल, ग्रीनपीस, वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर आदि में काम करने वाले लोग।
- **पकि-कॉलर कार्यकर्त्ता:** ये ऐसी नौकरी में संलग्न लोग हैं जिसे पारंपरिक रूप से महिलाओं का काम माना जाता है और अक्सर कम वेतन दिया जाता है।
- **स्कारलेट-कॉलर कार्यकर्त्ता:** यह एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल अक्सर पोर्नोग्राफी उद्योग में काम करने वाले लोगों, विशेष रूप से इंटरनेट पोर्नोग्राफी के क्षेत्र में महिला उद्यमियों के लिये किया जाता है।
- **रेड-कॉलर कार्यकर्त्ता:** सभी प्रकार के सरकारी कर्मचारी।
- **ओपन-कॉलर वर्कर:** ये ऐसे वर्कर हैं जो घर से कार्य करते हैं, खासकर इंटरनेट के ज़रिये।

गगि इकॉनमी क्या है?

- गगि इकॉनमी एक मुक्त बाज़ार प्रणाली है जिसमें सामान्य रूप से अस्थायी पद होते हैं और संगठन अल्पकालिक जुड़ाव के लिये स्वतंत्र श्रमिकों या कार्यकर्त्ता के साथ अनुबंध करते हैं।
- बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत के गगि वर्कफोर्स में सॉफ्टवेयर, साझा और पेशेवर सेवाओं जैसे उद्योगों में 1.5 मिलियन कर्मचारी कार्यरत हैं।
- इंडिया स्टाफिंग फेडरेशन की वर्ष 2019 की रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका, चीन, ब्राज़ील और जापान के बाद भारत वैश्विक स्तर पर फ्लेक्सि-स्टाफिंग में पाँचवाँ सबसे बड़ा देश है।
- गगि वर्कर्स को मोटे तौर पर प्लेटफॉर्म और नॉन-प्लेटफॉर्म-आधारित वर्कर्स में वर्गीकृत किया जा सकता है।
- **प्लेटफॉर्म कर्मचारी:** ये वे कर्मचारी हैं जिनका काम ऑनलाइन सॉफ्टवेयर ऐप या डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे फूड एग्रीगेटर प्लेटफॉर्म, Zomato, Swiggy, Ola, और अन्य पर आधारित है।
- **नॉन-प्लेटफॉर्म कर्मचारी:** ये श्रमिक आम तौर पर अंशकालिक या पूर्णकालिक रूप से लगे पारंपरिक क्षेत्रों में केजुअल वेतन और ऑन-अकाउंट (Own-Account) के कर्मचारी होते हैं।

गगि सेक्टर के प्रमुख चालक क्या हैं?

- **कहीं से भी कार्य करने का लचीलापन:** डिजिटल युग में कार्यकर्ता को एक नश्चिति स्थान पर बैठने की आवश्यकता नहीं होती है- कार्य कहीं से भी किया जा सकता है, इसलिये नयिकता किसी परियोजना के लिये उपलब्ध सर्वोत्तम प्रतभा का चयन स्थान से बंधे बना कर सकते हैं।
- **कार्य के प्रति बदलता दृष्टिकोण:** लगता है कि मिलियनियल जेनरेशन का करियर के प्रति काफी अलग नज़रिया है। वे ऐसा करियर, जिससे उनको संतुष्टि नहीं प्राप्त हो, बनाने के बजाय ऐसा कार्य करना चाहते हैं जो उनकी पसंद का है।

व्यापार प्रतिदर्श एवं तकनीक

- गति कर्मचारी वभिन्न मॉडल पर काम करते हैं जैसे कनिश्चिति शुल्क (अनुबंध की शुरुआत के दौरान तय), समय और प्रयास, वितरित किये गए कार्य की वास्तविकि इकाई एवं परिणाम की गुणवत्ता। फकिस्ड-फीस मॉडल सबसे प्रचलित है। हालाँकि समय और प्रयास मॉडल एक-दूसरे के करीब आते हैं।
- तकनीक में सकारात्मक परिवर्तन ने अनुबंध को बहुत आसान बना दिया है जिससे शर्मिकों के लिये काम ढूँढना संभव हो गया है और कंपनियों के लिये उन लोगों के साथ मलिकर काम करना संभव हो गया है जो कर्मचारी नहीं बल्कि कांटेक्टर हैं।

स्टार्ट-अप कल्चर का उदय:

- भारत में स्टार्ट-अप पारस्थितिकि तंत्र तेज़ी से विकसित हो रहा है।
- स्टार्ट-अप के लिये पूर्णकालिक कर्मचारियों को काम पर रखने से उच्च नश्चिति लागत की आवश्यकता होती है और इसलिये गैर-मुख्य गतिविधियों के लिये संवदितमक फ्रीलांसर काम पर रखे जाते हैं।
- स्टार्ट-अप अपने तकनीकी प्लेटफॉर्मों को मज़बूती प्रदान करने के लिये इंजीनियरिंग, उत्पाद, डेटा विज्ञान और एमएल जैसे क्षेत्रों में कुशल प्रौद्योगिकि फ्रीलांसर (प्रतिपरियोजना के आधार पर) को काम पर रखने पर भी विचार कर रहे हैं।

संवदि कर्मचारियों की बढ़ती मांग:

- बहुराष्ट्रीय कंपनियों महामारी के बाद परिचालन खर्च को कम करने के लिये विशेष रूप से वशिष्ट परियोजनाओं हेतु फ्लेक्सी-हायरिंग विकल्प अपना रही हैं।
- यह प्रवृत्ति भारत में गति संस्कृति के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

भारत में गति इकाँनमी की स्थिति

- भारत में अनुमानित 56% नए रोज़गार गति इकाँनमी कंपनियों द्वारा ब्लू-कॉलर और व्हाइट-कॉलर कार्यबल दोनों में उत्पन्न किये जा रहे हैं।
 - जबकि भारत में ब्लू-कॉलर नौकरियों के लिये गति इकाँनमी प्रचलित है, व्हाइट-कॉलर नौकरियों जैसे- परियोजना-वशिष्ट सलाहकार, विक्रेता, वेब डिज़ाइनर, सामग्री लेखक और सॉफ्टवेयर डेवलपरस में गति शर्मिकों की मांग भी उभर रही है।
- गति इकाँनमी भारत में गैर-कृषि क्षेत्रों में 90 मिलियन नौकरियों दे सकती है, जिसमें "दीर्घावधि" में सकल घरेलू उत्पाद में 1.25% जोड़ने की क्षमता है।
- जैसा कि भारत वर्ष 2025 तक 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने के अपने घोषित लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है, आय और बेरोज़गारी की खाई को पाटने में गति इकाँनमी एक प्रमुख भूमिका होगी।
- हाल ही में नीति आयोग ने 'इंडियाज बूमिंग गति एंड प्लेटफॉर्म इकाँनमी' शीर्षक से एक रिपोर्ट भी लॉन्च की।
- रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2029-30 तक भारत के गति वर्कफोर्स के 2.35 करोड़ तक बढ़ने की उम्मीद है।
- रिपोर्ट का अनुमान है कि वर्ष 2020-21 में 77 लाख (7.7 मिलियन) कर्मचारी गति इकाँनमी में शामिल थे। उन्होंने भारत में गैर-कृषि कार्यबल का 2.6% या कुल कार्यबल का 1.5% का योगदान दिया।

गति इकाँनमी के संबंध में चुनौतियाँ और समाधान क्या हैं?

- **चुनौतियाँ:**
 - नौकरी की सुरक्षा का अभाव, अनयिमति वेतन और अनश्चिति रोज़गार की स्थिति
 - अनश्चितिता के कारण बढ़ता तनाव उपलब्ध कार्य और आय में नयिमतिता से जुड़ा है।
 - इंटरनेट और डिजिटल तकनीक तक सीमिति पहुँच
 - प्लेटफॉर्म के मालिक और गति वर्कर के बीच संवदितमक संबंध बाद के कई कार्यस्थल पर उपलब्ध अधिकारों तक पहुँच से इनकार करते हैं।
 - एल्गोरिथम प्रबंधन प्रथाओं और रेटिंग के आधार पर प्रदर्शन मूल्यांकन के दबाव के कारण तनाव।
- **संभावित समाधान:**
 - प्लेटफॉर्म वर्करस और अपने स्वयं के प्लेटफॉर्म स्थापित करने में रुचि रखने वालों के लिये संस्थागत ऋण तक सुगम पहुँच।
 - युवाओं को रोज़गार योग्य बनाने के लिये उनका कौशल विकास।
 - सरकार सामाजिक सुरक्षा संहिता के माध्यम से प्लेटफॉर्म कार्यकर्ताओं का सार्वभौमिक कवरेज सुनिश्चित कर सकती है।
 - प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था में पहली बार उधारकर्ताओं को दिये गए असुरक्षित ऋणों को प्राथमिकता-प्राप्त क्षेत्र को उधार के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।
 - प्लेटफॉर्मों से जुड़े छोटे व्यवसायों और उद्यमियों का समर्थन करना।

गगि इकॉनमी के लयै लेबर कोड क्या है?

■ मौजूदा वधिन:

- **मजदूरी संहति, 2019** गगि श्रमकों संहति संगठति और असंगठति क्षेत्रों में सार्वभौमकि न्यूनतम मजदूरी व न्यूनतम मजदूरी का प्रावधन करती है।
- **सामाजकि सुरक्षा संहति, 2020** गगि श्रमकों को एक नई वयावसायकि श्रेणी के रूप में मानयता देती है।
- यह गगि वर्कर को एक ऐसे व्यक्तिके रूप में परभाषति करती है जो पारंपरकि नयिक्ता-करमचारी संबधों के बाहर काम करता है या कार्य व्यवस्था में भाग लेता है और ऐसी गतविधियों से आय अरजति करता है।

सुरक्षा संहति में संबध मुद्दे:

- **लाभ की कोई गारंटी नहीं:** सामाजकि सुरक्षा वधियक, 2020 संहति में प्लेटफॉर्म कार्यकरत्ता अब मातृत्व लाभ, जीवन और वकिलांगता कवर, वृद्धावस्था सुरक्षा, भवषिय नधि आदि जैसे लाभों के लयि पात्र हैं।
 - हालाँकि पात्रता का मतलब यह नहीं है कालाभ की गारंटी है।
 - कोई भी प्रावधन सुरक्षति लाभ नहीं देता है, जसिका अर्थ है कि केंद्र सरकार समय-समय पर कल्याणकारी योजनाएँ बना सकती है जो व्यक्तगित और कार्य सुरक्षा के इन पहलुओं को कवर करती हैं, लेकिन उनकी गारंटी नहीं है।
- **कोई नशिचति ज़मिमेदारी नहीं:** कोड केंद्र सरकार, प्लेटफॉर्म एग्रीगेटरस और श्रमकों की संयुक्त ज़मिमेदारी के रूप में बुनयिादी कल्याण उपायों के प्रावधन को बताता है।
- हालाँकि इसमें यह नहीं बताया गया है कि वेलफेयर के लयि कौन सा हतिधारक ज़मिमेदार है।

आगे की राह

- **पेड लीव्स, हेल्थ एक्सेस और बीमा:** प्लेटफॉर्म व्यवसायों द्वारा उन सभी करमचारियों के लयि, जो वर्ष भर उनके प्लेटफॉर्म से कार्य में संलग्न रहते हैं, कोवडि -19 महामारी द्वारा उत्पन्न चुनौतियों को कम करने हेतु शुरू कयि गए उपायों की तरज पर, बीमारी के लयि अवकाश, स्वास्थय सेवा तक पहुँच और बीमा के उपायों को उनके कार्यस्थल के एक हसिसे के रूप में प्लेटफॉर्मों द्वारा अपनाया जा सकता है।
 - इन फर्मों द्वारा जुड़े प्लेटफॉर्म वर्करस को सामाजकि सुरक्षा कवर की पेशकश से सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।
- **वयावसायकि रोग और कार्य दुर्घटना बीमा:** प्लेटफॉर्म भारत भर में सभी डलिवरी और ड्राइवर भागीदारों, और अन्य प्लेटफॉर्म करमचारियों को दुर्घटना बीमा प्रदान करने के लयि मॉडल अपना सकते हैं।
 - इन्हें नजी क्षेत्र या सरकार के सहयोग से पेश कयि जा सकता है, जैसा कि सामाजकि सुरक्षा संहति, 2020 के तहत परकिल्पति है।
- **सेवानवृत्त/पेंशन योजनाएँ और अन्य लाभ:** ऐसी नीतियों को अपनाने की आवश्यकता है जो वृद्धावस्था/सेवानवृत्त योजनाओं और लाभों की पेशकश करती हैं और आकस्मकि घटनाओं के लयि अन्य बीमा कवर प्रदान करती हैं जैसे कार्य करने के दौरान उत्पन्न चोट जसिसे रोजगार और आय का नुकसान हो सकता है।
- **काम की अनयिमतिता की स्थिति में कामगारों को सहायता:** गगि और प्लेटफॉर्म फर्म कामगारों को आय सहायता प्रदान करने पर वचिर कर सकते हैं।
 - काम में अनशिचतिता या अनयिमतिता के कारण होने वाली आय की हानि से सुनशिचति न्यूनतम आय और सामाजकि सुरक्षा प्रदान करने की दशि में यह एक महत्त्वपूर्ण कदम होगा।
- **कॉरपस फंड से आकस्मकिता कवर:** ऑटो-रकिशा, कैब और टैक्सी ड्राइवरों को उनकी आय पर लॉकडाउन के प्रभावों को कम करने के लयि एक मोबलिटि प्लेटफॉर्म ने 20 करोड़ रुपए का एक कोष बनाया, जसि "ड्राइव द ड्राइवर" कहा जाता है।
 - कॉरपस फंड से सामाजकि सुरक्षा कवर देने जैसे उपायों से आकस्मकिता के मामले में गगि और प्लेटफॉर्म वर्करस तथा सेक्टर से जुड़े अन्य स्व-नयिोजति व्यक्तियों को सहायता मलि सकती है।

नषिकर्ष

- "गगि इकॉनमी" फ्रेशर्स, अर्द्ध-कुशल और अकुशल कार्यबल के लयि रोजगार पैदा करने का एकमात्र तरीका है। इसलए, इस क्षेत्र को वनियिमति करने और इसे आगे बढ़ने में मदद करना महत्त्वपूर्ण है। हमें ऐसी नीतियों और प्रकरियाओं की आवश्यकता है जो इस क्षेत्र के कार्य करने के तरीके को स्पष्ट करें।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा वगित वर्ष के प्रश्न (PYQ)

Q. भारत में महिला सशक्तीकरण की प्रकरया में 'गगि इकॉनमी' की भूमकि का परीक्षण कीजयि।